International Journal Of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.3, March 2013
ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

संस्था प्रधान एवं उनकी प्रबन्ध शैलियाँ

रंजना शर्मा (प्रवक्ता)

राजस्थान शिक्षा महाविद्यालय,

ब्रह्मपुरी, जयपुर

सारांश

व्यक्तित्व की भांति ही एक संस्था प्रधान की प्रबंधन शैली का भी शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान होता है। एक संगठन की उन्नति अथवा पतन पूर्णतया उसके नेता एवं उसके द्वारा प्रयोग मे ली जाने वाली प्रबंधन शैलियों पर निर्भर करता है। सामान्यतः किन्ही दो प्रबंधकों की कार्यशैली समान नहीं होती है। अगर किसी प्रबंधक को सफल माना जाता है तो वह उसकी प्रबंधन शैली की सफलता के कारण ही सम्भव होता है। इस लेख के माध्यम से अध्यापक शिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों की विभिन्न शैलियों एवं उनके प्रभावों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

सभ्यता के विकास से पूर्व मानव की आवश्यकताएं सीमित थी, जिनकी पूर्ति वह स्वयं अपने प्रयास से कर लेता था, परन्तु मानवीय विकास के साथ–साथ आवश्यकताओं में भी वृद्धि हुई, जिससे व्यक्ति को उनकी पूर्ति करने में कठिनाई होने लगी और इस हेतु वह दूसरों की सहायता लेने लगा। यहीं से व्यक्ति में संगठित होने की प्रवृत्ति का विकास होने लगा। आज हमारे समक्ष विभिन्न प्रकार के संगठन है। ये संगठन औपचारिक, अनौपचारिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यावसायिक, प्रशासनिक एवं राजनैतिक सभी क्षेत्रों में स्थापित है। इन संगठनों अथवा संस्थाओं को निर्देशित, समन्वित तथा एकीकृत करने के लिए प्रबन्धन की आवश्यकता होती है।[1]

'प्रबन्धन' का सही एवं सरल शब्दों में अर्थ, एक संगठन में व्यक्तियों से व्यवस्थित एवं नियोजित कार्य कराना है। दूसरे शब्दों में संगठन में कार्यरत व्यक्तियों के उन प्रयासों से है, जिन्हें निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए नियोजित, निर्देशित एवं समन्वित किया जाता है। प्राथमिक स्तर पर यह सम्प्रत्यय पाश्चात् देशों में वैधानिक रूप से विकसित हुआ है। भारतीय दर्शन में प्राचीन काल से इस सम्प्रत्यय का प्रयोग स्वज्ञान के रूप में व्याख्यित किया
गया है। वेदान्त में प्रबन्धन को स्वयं की सत्यता या वास्तविकता का बोध के रूप में परिभाषित किया है।[2]

प्रबन्धन की व्यावहारिक परिभाषा देते हुए ड्रेवर ने कहा है कि ''प्रबन्धन के अन्तर्गत उद्देश्यों का प्रतिपादन करना, कर्मचारियों की व्यवस्था करना, उनको (उद्देश्य) प्राप्त करने का नियोजन करना, संगठन स्थापित करना, कर्मचारियों की व्यवस्था करना, उन्हें निर्देशन देना, समन्वित करना, उनके कार्यो का मूल्यांकन करना, नियंत्रण करना, उन्हें प्रोत्साहन देना और सभी क्रियाओं में समन्वय स्थापित करना है।''

Please cite this Article as : रंजना शर्मा ,संस्था प्रधान एवं उनकी प्रबन्ध शैलियाँ **:International Journal Of Creative Research Thoughts.Volume 1, Issue.3, March 2013**

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर प्रबन्धन के अर्थ को निम्न प्रारूप के माध्यम से सरलता से समझा जा सकता है –

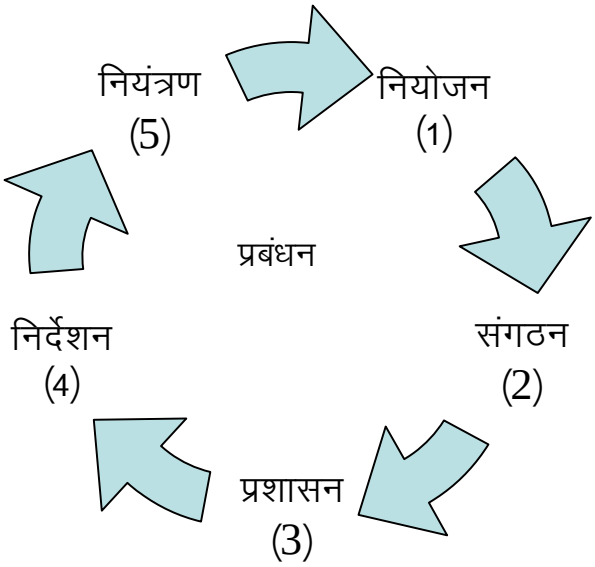

प्रबन्धन की प्रभावशीलता एवं कार्य क्षमता सामाजिक प्रणाली पर आधारित होती है। वर्तमान सामाजिक प्रणाली में जहाँ हम हर क्षेत्र में वैश्वीकरण की प्रवृत्ति की ओर बढ़ रहे हैं, वहाँ शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही है। ऐसी स्थिति में हमें चाहिए कि शिक्षण संस्थाओं के सुचारू एवं सरल प्रबन्धन के विषय में गहराई से विचार किया जाये, क्योंकि यहाँ पर समरूपता का लम्बा अन्तराल शैक्षिक संस्थाओं पर गहरा प्रभाव डालता है। वर्तमान समय की मांग के अनुसार शिक्षा के विभिन्न स्तरों की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए संस्था आधारित शैक्षिक प्रबंध की आवश्यकता है, अर्थात शैक्षिक प्रबन्धन हमारे देश की शैक्षिक संस्थाओं में एक आम एवं विशिष्ट सम्प्रत्यय के रूप में जाना जाता है। मोहंती[3] (1995) के अनुसार सम्प्रत्ययात्मक रूप से कहा जाये तो शैक्षिक प्रबन्धन नियोजन, संगठन, क्रियान्वयन, समन्वयन एवं मूल्यांकन आदि गतिविधियों की मिली जुली प्रक्रिया है जिसे निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है

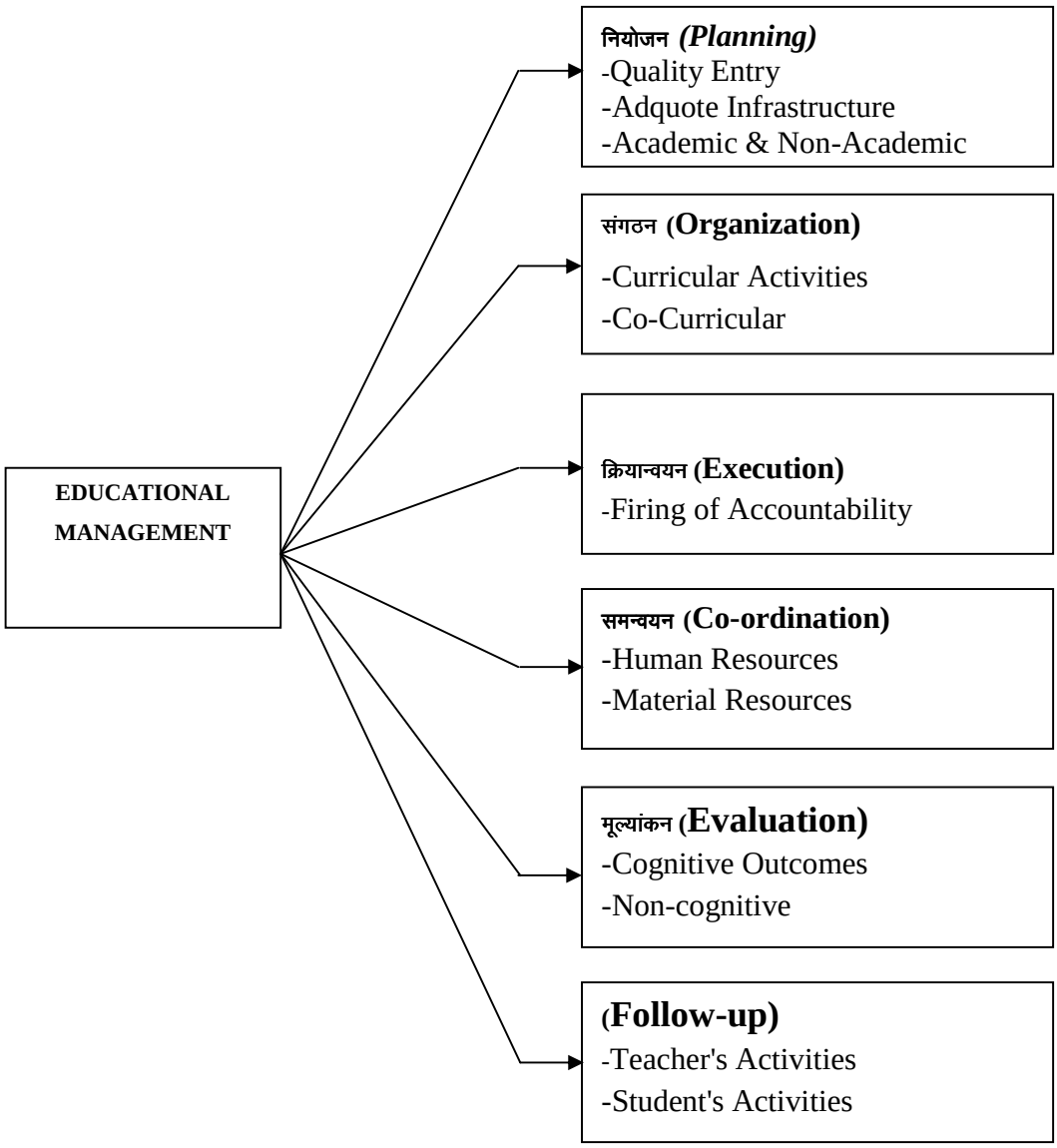

यदि शैक्षिक प्रबन्धन में उपर्युक्त सभी पहलुओं को जोड़ दिया जाये तो अनुदेशन में गुणवत्ता बढ़ायी जा सकती है, जो कि शिक्षण संस्थाओं में गुणवत्ता को विकसित करने में सहायक होगा। एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एडूकेशनल रिसर्च के आधार पर ''शैक्षिक प्रबन्धन वह प्रक्रिया है जिसमें

कार्यरत लोगों के प्रयासों को इस प्रकार संगठित एवं समन्वित किया जाता है कि जिससे मानवीय गुणों का प्रभावशाली ढ़ंग से विकास हो सके।''

किसी भी शिक्षण संस्था का मूल एवं प्रथम लक्ष्य तो प्रभावशाली अध्यापन करवाना ही होता है। अतः शैक्षिक प्रबन्धन की कुशलता प्रभावशाली अध्यापक में निहित होती है। संस्था का प्रबन्धन यदि कुशल है तो अन्य गतिविधियों के साथ अध्यापन कार्य भी निश्चित रूप से संतोषप्रद होगा। यह स्थिति शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू होती है। यथा – विद्यालय स्तर, विश्वविद्यालय स्तर एवं सभी तरह के प्रशिक्षण संस्थाओं के स्तर पर।

चूंकि शैक्षिक प्रणाली का मेरूदण्ड, मानव जाति का निर्माता तथा समाज का वास्तुकार होने के कारण हमारे देश में प्राचीनकाल से ही 'अध्यापक' को समाज का श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया गया है। आज कोई भी शैक्षिक योजना बिना कुशल अध्यापकों के सहयोग के सफल नहीं हो सकती। आधुनिक युग के शैक्षिक प्रबंध की यह एक स्वयं सिद्धि है कि अच्छी शिक्षा अच्छे शिक्षक पर ही निर्भर करती है।

ब्रूनर का मत है कि ''यह जानने के लिए किसी विस्तृत अनुसंधान की आवश्यकता नहीं है कि ज्ञान का सम्प्रेषण मुख्यतः अध्यापक की विषयगत प्रवीणता पर ही निर्भर होता है।'' अतः आवश्यक है कि अध्यापक शिक्षा व्यवस्था को शक्तिशाली स्वरूप प्रदान करें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु आवश्यक है कि शैक्षिक प्रबन्धन के माध्यम से शैक्षिक संस्थाओं में शिक्षा की उस कार्यप्रणाली पर जोर दिया जाये जो कि सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के विकास से ज्ञान का विस्फोट एवं प्रसार कर वैश्वीकरण की प्रक्रिया का नेतृत्व कर सके।

अतः शैक्षिक संस्थान में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उस संस्था के प्रधान की होती है, क्योंकि शिक्षण संस्थाओं में नीतियों को सबसे निचले स्तर पर क्रियान्वित करने हेतु यही व्यक्ति उत्तरदायी होता है। अन्य संस्थाओं की भाँति शिक्षण संस्थाओं का नेता या प्रधान प्राचार्य होता है। वह संस्था के प्रशासन एवं प्रबंध का मुख्य घटक होता है। शिक्षण संस्थाओं की कार्यकुशलता, गुणवत्ता स्तर तथा वातावरण प्राचार्य (प्रधान) के व्यक्तित्व, वृत्तिक दक्षता तथा कार्य कौशल पर निर्भर करती है। एक संस्था प्रधान का व्यक्तित्व अपने सभी अध्यापकों को अभिप्रेरित कर उन्हें उद्देश्यों व लक्ष्यों की पूर्ति व कर्त्तव्यपालन में सहायता प्रदान करता है। बीदावत (1982)[4] ने अपने शोध में पाया कि वह संस्था प्रधान जिसने व्यक्तित्व के घटक में ज्यादा अंक प्राप्त किये हैं वह सामाजिक रूप से परिपक्व व्यक्ति होता है। इस तरह का व्यक्तित्व रखने वाले संस्था प्रधान के सभी लोगों (कर्मचारियों) से अच्छे सम्बन्ध होते हैं। दूसरी ओर वह व्यक्ति जो व्यक्तित्व घटक में

प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ में बहुत अधिक अंक प्राप्त करता है, वे निडर, स्वावलम्बी एवं उच्च आकांक्षाओं से परिपूर्ण होता है।

गोल्ड हेमर तथा उनके साथियों द्वारा 100 प्रभावी विद्यालयों पर किए गए शोध कार्यों का एक मुख्य यह था कि जो शिक्षण संस्थान बहुत श्रेष्ठ है, उनमें अवश्यंभावी रूप से एक कुशल, आक्रामक, व्यावसायिक दृष्टि से सचेत व गतिशील संस्था प्रधान होता था। जो इस प्रकार शिक्षा कार्यक्रमों की क्रियान्विति करने में दृढ़ निश्चयी था, जिन्हें वह आवश्यक समझता था, बिना इस चिन्ता के कि भविष्य में क्या होगा?

प्रबन्धन शैलीः सम्प्रत्यय

मार्क ट्वेन ने कहा है कि – ''हिरणों की एक ऐसी सेना जिसका नेतृत्व शेर द्वारा किया जा रहा है, शेरों की उस सेना से कही बेहतर होती है, जिसका नेतृत्व हिरण द्वारा किया जा रहा है।''

संस्था प्रधान संस्था के प्रशासन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। यह शिक्षण संस्थाओं में ऐसी परिस्थितियों को उत्पन्न करता है, जिससे संस्था के शिक्षक एवं छात्र दोनों रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्य कर सके। शिक्षा के क्षेत्र में उसे छात्र–छात्र, शिक्षक–छात्र, शिक्षक–शिक्षक, शिक्षक निरीक्षक, शिक्षक–अभिभावक आदि के सम्बन्धों को संतुलित एवं निरीक्षित करना पड़ता है। शिक्षण संस्थाओं में शिक्षार्थियों की, शिक्षकों की एवं कार्यालय स्टाफ की जो भी समस्या होती है, वह सर्वप्रथम संस्था प्रधान के सामने आती है एवं प्रत्येक संस्था प्रधान उन समस्या का हल अलग–अलग तरीके से करते हैं। उसके यही समस्या समाधान के तरीके एवं कार्यशैली, उसकी 'प्रबन्धन शैलियाँ' कहलाती हैं।

प्रबन्धन शैली से तात्पर्य ''प्रबन्धन के दौरान विभिन्न मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, वातावरणीय, अभिवृत्ति एवं संवेदी तत्वों के प्रति प्रदत्त वरीयताओं के योग से है।''

अर्गरिस के अनुसार, ''विभिन्न संस्थाओं में उच्च अधिकारी के द्वारा नीतियों पर नियत्रण करना, कार्य प्रणाली को स्वयं निर्दिष्ट करना, भविष्य के परितोषको का नियंत्रण करना तथा अधीनस्थो के कार्य का विश्लेषण व मूल्यांकन करना, प्रबंधन शैली कहलाती है।''

प्रबन्धन शैलीः प्रकार

सामान्यतः किन्हीं दो प्रबंधकों की कार्यशैली समान नहीं होती है अगर होती भी है तो वह सामान्य अथवा अप्रभावी (नीरस) हो जाती है। अगर किसी प्रबंधक को सफल माना जाता है तो वह उसकी प्रबंध शैली के कारण ही संभव होता है। यह शैलियाँ कई प्रकारों की भी हो सकती है।

विलियमसन (2002) के अनुसार [5]

(1) अधिकारिक प्रबन्धन शैली

(2) सहभागित्ववादी अथवा प्रजान्त्रिक प्रबन्धन शैली –

(अ) व्यक्तिगत (ब) अहस्तक्षेपवादी

(स) संदेहास्पद (Chaotic)

(3) अहस्तेक्षपवादी प्रबन्धन शैली

स्मॉल बिजनिस डॉट कॉम के अनुसार[6]

(1) सहभागित्वादी प्रबन्धन शैली (2) निर्देशात्मक प्रबन्धन शैली

(3) सामूहिक कार्यात्मक (Team Work) प्रबन्धन शैली

इवान करमिचेल डॉट कॉम के अनुसार[7]

(1) प्रतिरोधात्मक (Coercive) प्रबन्धन शैली

(2) अधिकारिक (Authoritative) प्रबन्धन शैली

(3) सम्बद्धात्मक (Affiliative) प्रबन्धन शैली

(4) प्रजातांत्रिक (Democratic) प्रबन्धन शैली

(5) गति निर्धारक या वेगवान (Pacestting) प्रबन्धन शैली

(6) निर्देशात्मक (Coaching) प्रबन्धन शैली

प्रिंस इफेरी फ्रो के अनुसार[8]

(1) अधिकारिक (Authoritative) प्रबन्धन शैली (2) (Authoritarian) प्रबन्धन शैली

(3) प्रजातांत्रिक (Democratic) प्रबन्धन शैली (4) सम्बद्धात्मक (Affiliative) प्रबन्धन शैली

(5) वेगवान (Permissive) प्रबन्धन शैली (6) तटस्थवादी (Indifferent) प्रबन्धन शैली

(7) निर्देशात्मक (Coaching) प्रबन्धन शैली (8) गतिनिर्धारिक अथवा भूमिका निर्वाह (Pacesetting or Rolemodel) प्रबन्धन शैली (9) दूरदर्शी प्रबन्धन शैली (Visionary)

(10) नौकरशाही (Burecuratic) प्रबन्धन शैली (11) रक्षात्मक (Defensive) प्रबन्धन शैली

विविध शैली साहित्य में पाया कि यद्यपि अधिकांश विद्वानों, शोधकर्ताओं द्वारा किये गये प्रबन्धन शैलियों के नामकरण में पर्याप्त विविधताएँ हैं तथापि प्रबन्धन शैली के विवेचन में समानताएँ भी हैं। प्रबन्धन शैली साहित्य के गहन अध्ययन एवं विश्लेषण में उपलब्ध विविधताओं एवं

समानताओं के आधार पर शोधकर्त्री ने अध्ययन हेतु अग्रलिखित नौ द्वि–ध्रुवीय प्रबन्धन शैलियों को चिन्हित किया है–

1. उत्तरदायित्वपूर्ण बनाम उत्तरदायित्वमुक्त प्रबन्धन शैली
2. व्यक्ति उन्मुख बनाम समूह उन्मुख प्रबन्धन शैली
3. अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित प्रबन्धन शैली
4. क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित प्रबन्धन शैली
5. हस्तक्षेप प्रधान बनाम अहस्तक्षेप प्रधान प्रबन्धन शैली
6. सहभागिता युक्त बनाम सहभागिता मुक्त प्रबन्धन शैली
7. प्रक्रिया उन्मुख बनाम परिणाम उन्मुख प्रबन्धन शैली
8. अन्तःक्रियात्मक बनाम गैर अन्तःक्रियात्मक प्रबन्धन शैली
9. केन्द्रीकृत बनाम विकेन्द्रीकृत प्रबन्धन शैली

इस प्रकार उपर्युक्त प्रबन्धन शैलियाँ किसी न किसी रूप में प्रत्येक संस्था की गतिविधियों को प्रभावित करती है परन्तु अन्य सभी संस्थाओं की अपेक्षा शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में ये ओर भी अधिक महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि शिक्षण संस्थाएं समाज का प्रतिबिम्ब होती है। अतः जिस समाज में संस्था प्रधान स्वयं रहता है, उसे उस समाज की सामाजिक दशाओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समुचित ढंग से संस्था तथा समाज में अधिकाधिक सहयोग स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। इस हेतु वह समय–समय पर भिन्न–भिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग करता है, ताकि शिक्षक एवं कार्मिक तनाव मुक्त होकर कार्य कर सके व अपनी सम्पूर्ण क्षमता का उपयोग शिक्षार्थियों के विकास में कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सेसादेबा पाने (2009): एडूकेशनल मैनेजमेंट ए स्टेप टूवर्ड्स क्वालिटी स्कूलिंग, एबस्ट्रेक्ट, जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च. पृ.सं. 18–19
2. विजेन्द्र शर्मा (2011) मैनेजमेंट ऑफ एडूकेशन, लक्ष्य पब्लिकेशन, न्यू देहली, पृ.सं. 2.
3. जे. मोहन्ती (1995): एडूकेशनल एडमिनिस्ट्रेशनल एण्ड सुपरविजन, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना
4- जिला शिक्षा अनुसंधान वाक्पीठ चुरू के शोध निष्कर्षो का सारांश (1981–82) प्रकाशक सत्र कार्यालय,

Please cite this Article as : रंजना शर्मा ,संस्था प्रधान एवं उनकी प्रबन्ध शैलियाँ **:International Journal Of Creative Research Thoughts,Volume 1, Issue.3, March 2013**

5- डॅनकन विलियमसन (2002)
6- डब्ल्यू. डब्ल्यू. डब्ल्यू. स्मॉल बिजनिस. डी.एन.बी. कॉम
7- इवानकरमिचेल एट डब्ल्यू. डब्ल्यू. डब्ल्यू.,कॉम
8- प्रिंस इ'फेरी फ्रो. एट डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू. बायलेसा.ऑर्ग.यूके/पीडीएफ/बीएसयूपी–मैनेजमेंट

पुस्तकें –

1. अर्गरिस, चार्ल्स (1980): रिसर्च ट्रेंड इन एग्जीक्यूटिव बिहेवियर इन एडवांस्ड मैनेजमेंट.
2. अग्रवाल, भटनागर एवं भटनागर (1995): शैक्षिक प्रबन्धन, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ.
3. अग्रवाल, जे.सी. (1998): विद्यालय प्रशासन एवं प्रबन्धन, दोआबा हाउस, नई सड़क, दिल्ली.
4. चौधरी, नमिता रॉय (2001) : मैनेजमेट इन एजूकेशन, ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली.
5. ड्रेवर, आर.एस. यथा उदधृत शर्मा, आर.ए. (2001), शिक्षा प्रशासन एवं प्रबन्धन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. देसाई, डी.बी. एवं अन्य (1979) : स्कूल मैनेजमेंट एण्ड चेन्ज, बडौदा, सी.ए.एस.ई., एम.एस. यूनिवर्सिटी (म.प्र.)
7. पाड्या, एल.एम. (1996) : प्रिसीपल्स एण्ड प्रैक्टिस ऑफ मैनेजमेन्ट, सुल्तान चंद एण्ड सन्स, एम.डी..
8. बाजपेयी, एस.आर (1987) : मैथड्स ऑफ सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, किताब घर, कानपुर.
9. बेस्ट, जॉन, डब्ल्यू. (1983) : रिसर्च इन एड्यूकेशन, प्रिटिंग हॉल ऑफ इंण्डिया लि., नई दिल्ली.
10. ब्लैक, रॉबर्ट आर., मॉटोन (1964) : द मैनेजमेंट ग्रिड, ऑस्टीन टेक्सास.
11. मोहंती, जे. (1995): एडूकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड सुपरविजन, कल्याणी पब्लिसर्स, लुधियाना.
12. सक्सेना, ए.के. (2001): शिक्षा में अनुसंधान, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर.

जनरलस –

1. गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया, नेशनल पॉलिसी ऑन एजूकेशन, एक्शन प्लान, 1992.
2. दीवान, रश्मि, ए स्टडी ऑफ लीडरशिप बिहेवियर एण्ड वैल्यू पैटर्न्स अमंग स्कूल प्रिसींपल, पी.एच. डी., एडूकेशन, फन्टीयर्स ऑफ एडूकेशन (30) 3, 1992, लोकबोध केन्द्र जनकपुरी, नई दिल्ली, पृ.सं. 315–331.
3. पारिख, जागृति एवं पाण्डा, दीप्ति (2010): गुणात्मकता की कसौटी पर अध्यापक शिक्षा, नया शिक्षक (अक्तू–दिस. 2010), पृ. 35–37

Please cite this Article as : रंजना शर्मा ,संस्था प्रधान एवं उनकी प्रबन्ध शैलियाँ **:International Journal Of Creative Research Thoughts,Volume 1, Issue.3, March 2013**

शोध प्रबन्ध

1. अहमद, मो. जबरदस्त (2006): ए स्टडी ऑफ एडमिनिस्ट्रेटिव एण्ड एकेमेडिक डिसीजन मैकिंग इन सलेक्टेड कॉलेज ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ देहली, पी.एच.डी. एजूकेशन, देहली यूनिवर्सिटी, न्यू देहली.
2. अली, शमशेद (2003): ए कमपेरेटिव स्टडी ऑफ द लीडरशिप स्टाइल, इन्टर पर्सनल रिलेशनशिप एण्ड इफेक्टिवनेस ऑफ द रिक्रूटेड एण्ड प्रोमोटेड प्रिसीपल्स ऑफ देहली, पी.एच.डी. डिपाटमेंट ऑफ एडूकेशनल स्टडीज, जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी, दिल्ली.
3. बहुगुणा, सुशीलचन्द्र (2002): एन ऐनालेटीकल स्टेडी ऑफ द डिसीजन मेकिंग स्टाइल्स, प्रिफरेंस ऑफ द प्रिंसीपल्स ऑफ हायर सैकेण्डरी स्कूल एज परसीवड बाय द टीचर्स, पी.एच.डी. एजूकेशन, एच.एन.डी. गढ़वाल यूनिवर्सिटी, श्रीनगर.
4. मैथ्यूथॉमस सी. (2003): ए स्टडी ऑफ आर्गेनाइजेशनल कमीटमेन्ट ऑफ डिग्री कॉलेज टीचर्स इन रिलेशन टू वर्क वैल्यू, सैल्फ एक्च्यूलाइजेशन एण्ड लीडर बिहेवियर ऑफ प्रिंसीपल्स, पी.एच.डी. एडूकेशन, बैंगलोर यूनिवर्सिटी, कर्नाटक
5. रवि, वी. (2003): ए स्टडी ऑफ द फेक्टर्स कन्ट्रीब्यूट टू द एफीसिएन्सी ऑफ द हेड ऑफ द इन्सटीट्यूड इन प्राइवेट स्कूल इन रिलेशन टू वेअर एफीसिएंसी एज एडमिनिस्ट्रेटर्स एण्ड एज ए टीचर्स, पी.एच.डी. भाराथेर यूनिवर्सिटी, कोयम्बतूर.

Please cite this Article as : रंजना शर्मा ,संस्था प्रधान एवं उनकी प्रबन्ध शैलियाँ **:International Journal Of Creative Research Thoughts,Volume 1, Issue.3, March 2013**